बी.एच.आई.सी.-113: भारत का इतिहास-VIII (*c.*1857-1950)

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड: **BHIC-113**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.सी. -113 /ए.एस.टी./TMA/2026-2027**
अधिकतम अंक: **100**

नोट: यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) उपनिवेशवाद के विभिन्न सिद्धान्तों पर चर्चा कीजिए। 20

2) भारतीय इतिहास में असहयोग आंदोलन के प्रभाव का वर्णन कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) कांग्रेस की उत्पत्ति से संबंधित विवादों की समीक्षा कीजिए। 10

4) मार्ले–मिण्टो सुधार पर चर्चा कीजिए। 10

5) आजाद हिन्द फौज के गठन को समझाइये। भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर आजाद हिन्द फौज का क्या प्रभाव पड़ा? 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) गरम दल का सैद्धान्तिक आधार 6

7) गाँधी जी की विचारधारा 6

8) हिन्दी 6

9) कांग्रेस और मुस्लिम लीग 6

10) कैबिनेट मिशन 6

1) उपनिवेशवाद के विभिन्न सिद्धान्तों पर चर्चा कीजिए। 20

उत्तर

उपनिवेशवाद वह राजनीतिक-आर्थिक व्यवस्था है जिसमें कोई शक्तिशाली देश दूसरे देश या क्षेत्र की भूमि, प्रशासन, संसाधनों, व्यापार और श्रम पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष नियंत्रण स्थापित करता है। आधुनिक युग में यूरोपीय साम्राज्यों का विस्तार केवल सैनिक विजय की कहानी नहीं था; इसके पीछे पूँजी संचय, बाजार की खोज, सामरिक हित, विचारधारा और स्थानीय परिस्थितियों का जटिल संबंध था। इसलिए इतिहासकारों एवं राजनीतिक अर्थशास्त्रियों ने उपनिवेशवाद को समझाने के लिए कई सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं। प्रत्येक सिद्धान्त उसके किसी महत्त्वपूर्ण पक्ष को स्पष्ट करता है, किंतु कोई एक व्याख्या हर समय और हर उपनिवेश पर समान रूप से लागू नहीं होती।

आर्थिक एवं उदारवादी व्याख्या

ब्रिटिश अर्थशास्त्री जे. ए. हॉब्सन ने अपनी पुस्तक *Imperialism: A Study* (सन् 1902) में साम्राज्यवाद की जड़ों को आय और संपत्ति के असमान वितरण से जोड़ा। उनका तर्क था कि जब समाज की बड़ी आय थोड़े लोगों के पास केंद्रित होती है, तो व्यापक जनता की क्रयशक्ति और घरेलू उपभोग सीमित रहते हैं। इससे पूँजीपति अतिरिक्त निवेश के लिए बाहरी क्षेत्रों, सुरक्षित बाजारों और लाभदायक अवसरों की तलाश करने लगते हैं। वित्तीय तथा व्यापारिक हित सरकार की विदेश नीति को प्रभावित करते हैं। हॉब्सन के अनुसार उपनिवेशवाद पूँजीवादी व्यवस्था की अनिवार्य परिणति नहीं है; आय का अधिक न्यायपूर्ण वितरण तथा लोकतांत्रिक नियंत्रण इसकी प्रेरणा को घटा सकते हैं। इस व्याख्या की विशेषता आर्थिक हितों और राजनीतिक दबावों को जोड़ना है, किंतु यह नस्ली श्रेष्ठता, प्रतिष्ठा और सामरिक प्रतिस्पर्धा जैसे कारणों की पूरी व्याख्या नहीं करती।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण

कार्ल मार्क्स ने औपनिवेशिक विस्तार को पूँजीवाद के विश्वव्यापी प्रसार और प्रारंभिक पूँजी संचय की प्रक्रियाओं से संबंधित माना। व्यापारिक एकाधिकार, उपनिवेशों में भूमि-राजस्व की वसूली, कच्चे माल की उपलब्धता और स्थानीय उत्पादन के पुनर्गठन से यूरोपीय औद्योगिक पूँजीवाद को बल मिला। भारत के संदर्भ में औपनिवेशिक नीतियों से परंपरागत हस्तशिल्प, कृषि और व्यापार के संबंध बदले। मार्क्स ने परिवर्तन के भौतिक पक्ष का अध्ययन किया, लेकिन उनकी कुछ समकालीन टिप्पणियों को उपनिवेशवाद के विनाशकारी मानवीय प्रभावों से अलग करके नहीं पढ़ना चाहिए। बाद के मार्क्सवादी इतिहासकारों ने साम्राज्यवादी शोषण तथा उपनिवेशों के भीतर वर्गीय असमानताओं पर अधिक व्यवस्थित शोध किया।

लेनिन का साम्राज्यवाद का सिद्धान्त

वी. आई. लेनिन ने *Imperialism, the Highest Stage of Capitalism* (सन् 1916) में तर्क दिया कि विकसित पूँजीवाद के एकाधिकारवादी चरण में विशाल कंपनियाँ, बैंकिंग पूँजी और औद्योगिक पूँजी मिलकर वित्तीय पूँजी की शक्तिशाली संरचना बनाते हैं। पूँजी का निर्यात, कच्चे माल के स्रोतों पर नियंत्रण तथा विश्व के क्षेत्रों का महाशक्तियों के बीच बँटवारा साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा को बढ़ाता है। उनके अनुसार औपनिवेशिक संघर्ष और युद्ध केवल शासकों की व्यक्तिगत